सोभा सिंह – एक दिव्य कलाकार

प्रख्यात चित्रकार की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में विशेष

(लेखक: राजेश चंद्र बाली)

सरदार सोभा सिंह हृदय से एक सच्चे कलाकार थे। एक ऐसे कलाकार, जिनकी सर्वशक्तिमान ईश्वर में आस्था और सौंदर्य, अच्छाई तथा मानवीय मूल्यों के प्रति उनका चिरस्थायी दर्शन आज भी उन्हें उनकी अमर कलाकृतियों के माध्यम से जीवंत बनाए हुए है—वे कृतियां जो उनके शाश्वत चित्रों के फ्रेम से बाहर आकर मानो स्वयं बोल उठती हैं। वे भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित समकालीन कलाकारों में से एक रहे हैं।

पाश्चात्य तैल चित्रकला (Western oil painting) की शास्त्रीय विधियों का उपयोग करते हुए इस महान चित्रकार ने अनेक कालजयी कृतियां रचीं। उन्होंने सिख इतिहास और पंजाबी लोककथाओं के महत्वपूर्ण पात्रों के अत्यंत मार्मिक और अविश्वसनीय रूप से सजीव चित्र उकेरे। सोभा सिंह की चिरस्थायी कलाकृतियों में सिख गुरु, पैगंबर, संत और पौराणिक व्यक्तित्व जीवंत हो उठते हैं।

यद्यपि उनकी कला मुख्य रूप से प्रसिद्ध धार्मिक और प्रेम-प्रसंगों को दर्शाती है, किंतु उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति प्रथम गुरु, श्री गुरु नानक देव जी की है, जिसमें वे आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाए हुए हैं—यह चित्र ईश्वर में आस्था रखने वाले प्रत्येक परिवार को आशीर्वाद प्रदान करता है। हालांकि, उनका पहला चित्र छठे सिख गुरु, श्री हरगोबिंद साहिब जी का था।

'सोहनी-महिवाल' और सम्राट शाहजहां की बाहों में मुमताज महल की उनकी सर्वव्यापी कृति—जिसका शीर्षक 'लास्ट डिजायर ऑफ मुमताज महल' (मुमताज महल की अंतिम इच्छा) है—प्रेम का वास्तविक चित्रण हैं। सोहनी-महिवाल अविभाजित पंजाब की एक प्रसिद्ध दुखांत प्रेम कहानी है, जिसने सोभा सिंह को मंत्रमुग्ध कर दिया था। वे इस कथा से इतने अभिभूत थे कि 1937 और 1980 के बीच उन्होंने इस चित्र के पांच अलग-अलग संस्करण बनाए। इनमें से पहला चित्र 1937 में बनाया गया था, जिसे वे 1947 के विभाजन के दौरान लाहौर में ही छोड़ आए थे।

जैसा कि प्रसिद्ध कहावत है कि सुंदरता देखने वाले की आंखों में होती है, उसी प्रकार सोभा सिंह की कल्पनाशक्ति और सीधे उनके हृदय से निकले रंगों का चुनाव, उनकी कलाकृतियों को निहारने वाले प्रत्येक व्यक्ति की आंखों को अपार आनंद प्रदान करता है।

यह जानकर कई लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि एक स्थापित और प्रख्यात चित्रकार बनने से पहले वे ब्रिटिश-भारतीय सेना में तीसरी पीढ़ी के सैनिक थे। उनका जन्म 29 नवंबर, 1901 को गुरदासपुर जिले में ब्यास नदी के तट पर बसे एक छोटे से कस्बे श्री हरगोबिंदपुर में माता बीबी अछरां देवी और पिता सरदार देवा सिंह के घर हुआ था। उनके पिता सेना की 22वीं बटालियन में सर्वेयर होने के साथ-साथ एक प्रशिक्षित घुड़सवार सैनिक (कैवेलियर) और प्रतिभाशाली चित्रकार भी थे। उनके दादा, सरदार चरहत सिंह भी महाराजा रणजीत सिंह की सेना में घुड़सवार सैनिक थे।

सोभा सिंह मात्र 15 वर्ष के थे जब उन्होंने अपने बहनोई से चित्रकला सीखना शुरू किया और बाद में 1915 में अमृतसर के इंडस्ट्रियल स्कूल से कला एवं शिल्प (Art & Craft) में एक वर्षीय पाठ्यक्रम में दाखिला लिया। हालांकि, 1919 से 1923 तक ब्रिटिश-भारतीय सेना में मुख्य मानचित्रकार (Head Draughtsman) के रूप में 5 वर्षों तक सेवा देने के बाद उन्होंने पूर्ण रूप से चित्रकला के अपने जुनून को अपनाया। इस अवधि के दौरान मानचित्र बनाने के साथ-साथ उन्होंने अपनी चित्रकला के कौशल को भी निखारा।

1923 में बीबी इंदर कौर से विवाह के पश्चात, उन्होंने अमृतसर के फव्वारा चौक पर 'सुभाष स्टूडियो' खोला। उनके स्टूडियो का नाम महान क्रांतिकारी सुभाष चंद्र बोस से प्रेरित था। 1925 से 1929 के बीच लाहौर के अनारकली में 'इको स्कूल ऑफ आर्ट' (Echo School of Art) की स्थापना करने के बाद उन्होंने एक सफल चित्रकार के रूप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। 1935 में उनके दो चित्रों को 'लंदन इलस्ट्रेटेड वीकली' में शामिल किया गया। यह दिलचस्प बात है कि सोभा सिंह, जब सेना के प्रचार विभाग (Publicity Department) में मुख्य कलाकार के रूप में कार्यरत थे, ने 1945 के ऐतिहासिक शिमला सम्मेलन के लिए पोस्टर भी बनाए थे।

सोभा सिंह के पौत्र डॉ. हिरदय पाल सिंह ने इस लेखक से बातचीत में बताया कि भारत और पाकिस्तान के विभाजन ने उन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। 1947 में विभाजन की पूर्व संध्या पर उन्हें लाहौर छोड़ना पड़ा और वे अपने लगभग 300 कलाकृतियों—जिनमें साठ अमूल्य चित्र शामिल थे—तथा अन्य कीमती सामान को वहीं पीछे छोड़ आए।

अंततः वे हिमाचल की कांगड़ा घाटी स्थित पालमपुर के शांत गांव अंद्रेटा में बस गए और अपनी विभिन्न उत्कृष्ट कृतियों के माध्यम से इस छोटे से गांव को अंतरराष्ट्रीय कला मानचित्र पर ला खड़ा किया। आज यहां 'सोभा सिंह आर्ट गैलरी एंड म्यूजियम' स्थापित है, जिसका प्रबंधन उनकी पुत्री बीबी गुरचरण

कौर और उनके पुत्र डॉ. हिरदय पाल सिंह परिवार द्वारा किया जा रहा है। हिमालय की तलहटी में स्थित यह शांत स्थान कला प्रेमियों और उनके प्रशंसकों को उस युग में वापस ले जाता है, जब सोभा सिंह जी ने जीवन के अत्यंत करीब दिखने वाले सजीव चित्र बनाए थे। इनमें सिख गुरुओं के प्रतिष्ठित चित्रों के अलावा स्वतंत्रता सेनानियों, राष्ट्रीय व्यक्तित्वों, पंजाब और हिमाचल की दुल्हनों तथा हिमालय के आदिवासी समुदायों के चित्र शामिल हैं। उनके चित्र अपनी आध्यात्मिक गहराई, सौंदर्य उत्कृष्टता और मानवीय मूल्यों के माध्यम से आज भी पीढ़ियों को प्रेरित कर रहे हैं।

1973 में, केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने इस प्रख्यात भारतीय कलाकार के जीवन और 75वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में उनकी जीवनी पर आधारित 'पेंटर ऑफ द पीपल' (Painter of The People) नामक एक वृत्तचित्र (डॉक्यूमेंट्री फिल्म) बनाया।
(वृत्तचित्र का लिंक – https://www.wavespb.com/links/SH14620cZQ – इसे प्रसार भारती के आधिकारिक ओटीटी प्लेटफॉर्म 'वेव्स' (WAVES OTT) पर देखा/डाउनलोड किया जा सकता है)

सोभा सिंह जी को 1983 में भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'पद्म श्री' से अलंकृत किया गया। भारत सरकार के डाक विभाग ने 29 नवंबर, 2001 को उनके जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर एक स्मारक डाक टिकट जारी किया।

इस वर्ष 27 नवंबर को इस महान कलाकार की 125वीं जयंती के अवसर पर, पंजाब के गुरदासपुर जिले में स्थित उनकी जन्मभूमि श्री हरगोबिंदपुर से वर्ष भर चलने वाले समारोहों का शुभारंभ होगा, जिसका समापन नवंबर 2027 में हिमाचल प्रदेश के अंद्रेटा स्थित उनकी कर्मभूमि में होगा। ये समारोह **"जन्मभूमि से कर्मभूमि"** विषय (थीम) पर केंद्रित होंगे।

सोभा सिंह मेमोरियल आर्ट सोसाइटी (SSMAS), अंद्रेटा द्वारा भारतीय कला प्रेमियों के प्रति कलाकार के उत्कृष्ट योगदान को रेखांकित करने के लिए इन समारोहों में विश्वविद्यालयों, सांस्कृतिक संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और राज्य सरकारों के सहयोग से कला, सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित करने की योजना बनाई गई है।

सोसाइटी के महासचिव डॉ. हिरदय पाल सिंह ने बताया कि समारोहों की शुरुआत नवंबर के दूसरे पखवाड़े में बठिंडा में कला महोत्सवों के साथ होगी। सोसाइटी 27 नवंबर को श्री हरगोबिंदपुर में एक विशेष

कार्यक्रम आयोजित करेगी, जिसमें धार्मिक समागम और स्कूली छात्रों के लिए चित्रकला प्रतियोगिताएं शामिल होंगी। पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कलाकार के जीवन के विभिन्न चरणों में उनसे जुड़े रहे परिवारों के वंशजों को सम्मानित करने के लिए एक विशेष 'कृतज्ञता समारोह' भी प्रस्तावित है।

डॉ. पॉल ने बताया कि 2027 में अंद्रेटा स्थित उनके ऐतिहासिक स्टूडियो में सोभा सिंह की एक सिलिकॉन प्रतिमा का अनावरण भी किया जाना है। सोसाइटी कलात्मक उत्कृष्टता के सम्मान में एक उत्कृष्ट कलाकार को 'सोभा सिंह कला पुरस्कार' प्रदान करने का भी प्रस्ताव रखती है।

सोभा सिंह के कुछ प्रसिद्ध कथन हैं: *"गुरु नानक मेरी साधना की अभिव्यक्ति हैं। चित्रकला मेरा जीवन है – गुरु मेरे प्राण-रक्त हैं। मैंने लोगों को प्रेरित करने के लिए गुरुओं के चित्र बनाए हैं। गुरु का चित्रण करना मेरे वास्तविक स्व के विकास के चरम के सबसे निकट है"* और *"धर्म आस्था के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। जनमानस को भौतिकवादी दर्शन के माध्यम से शिक्षित नहीं किया जा सकता। वे धर्म के माध्यम से ही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।"*

सिख परिवारों में बुजुर्ग पिता तुल्य व्यक्तियों को दिए जाने वाले सम्मानजनक उपनाम 'दारजी' के रूप में प्रसिद्ध सरदार सोभा सिंह जी, अपने नाम "सोभा" (जिसका अर्थ है गरिमा/आभा) के अनुरूप, चार दशक पूर्व 22 अगस्त, 1986 को इस संसार को अलविदा कह गए, और अपने पीछे ऐसी अमिट स्मृतियां छोड़ गए जो अपनी गरिमामयी कलाकृतियों के माध्यम से कला के इतिहास और विश्व भर के कला प्रेमियों को सदैव सुशोभित और मंत्रमुग्ध करती रहेंगी।

****

(लेखक एक भारतीय सूचना सेवा (IIS) अधिकारी हैं और वर्तमान में आकाशवाणी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, जालंधर में क्षेत्रीय समाचार प्रमुख के पद पर कार्यरत हैं)